संकल्पना

(काव्य संग्रह)

• डॉ. वासिफ़ काज़ी

संकल्पना

(काव्य संग्रह)

डॉ वासिफ क़ाज़ी इंदौर

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा वुमन आवाज को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

आत्ममंथन

भाषा, भावों की अनुगामिनी होती है, मानव मन में विचारों का अंतर्द्वंद्व , स्वाभाविक है । जिस तरह शरीर के पोषण और स्वाध्याय के लिए भोजन आवश्यक है, ठीक उसी तरह आत्मा के स्वाध्याय और संतुष्टि के लिए चिंतन भी अनिवार्य है।

मैं कोई पेशेवर कवि नहीं हूं, परंतु मनुष्य होने के नाते अनेकानेक संवेदनाएं,भाव विचार मेरे मन में भी जन्म लेते हैं , इन्हीं भावों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति अपने प्रथम काव्य संग्रह "संकल्पना" के माध्यम से कर अपनी साहित्यिक यात्रा का श्री गणेश कर रहा हूं । "संकल्पना" विचार पुष्पों का वो गुलदस्ता है, जिसमें गुलाब सी सौम्यता भी,चंदन सी पवित्रता भी और केसर सी महक भी।

"संकल्पना" में 'नारी शक्ति' का महिमा मंडन और स्तुति गान है तो 'इंसान' के स्वभाव का चित्र उकेरती रचना भी ।'राष्ट्रप्रेम' का जयघोष है, तो दूसरी ओर 'रक्षाबंधन' के रूप में भाई बहन के अटूट और मर्म- स्पर्शी प्रेम की अभिव्यंजना भी ।

अंततः "संकल्पना" का रचनाकार होने के नाते मात्र यही कहना चाहता हूं,कि इस काव्य संग्रह का प्रत्येक पुष्प अपनी सुरभि बोझिल वायु से आपके मन मयूर को उल्लासित कर देगा । "संकल्पना" का उद्देश्य शब्दों एवं भावों का पल्लवन है , काव्य रसिकों के समक्ष अपना अतिसूक्ष्म प्रयास "संकल्पना" के माध्यम से प्रस्तुत कर रहा हूं।

मैं यथाशक्ति, यथाभक्ति प्रकाशक महोदय एवं उन समस्त सम्माननीय मित्रों का हृदय से आभारी हूं जिनके अभिनव प्रयास से ही "संकल्पना" को मूर्तरूप प्रदान कर सका। **"संकल्पना" को आप सभी का शुभाशीष और शुभकामनाएँ प्राप्त होंगी, आशा ही नहीं अपितु पूर्ण रूपेण विश्वास है।।**

कृपाभिलाषी
डॉ वासिफ क़ाज़ी इंदौर

अनुक्रमणिका

नारी शक्ति	-	5
तेरा चेहरा	-	6
इंसान	-	7
उजाला	-	8
तस्वीर	-	9
देशप्रेम की सुगंध	-	10
नया सवेरा	-	11
रक्षाबन्धन	-	12
जीवन का झरना	-	13
रमज़ान	-	14
ताज बेमिसाल	-	15
गुड़ी पड़वा विशेष	-	16

नारी शक्ति

तुमसे ही सब रिश्तें,
तुमसे ही सब नाते हैं।
तुमसे ही ये जीवन बनता,
तुमसे दिन और रातें हैं ।।

कभी बहन बन कर तुम,
रक्षा संकल्प कराती हो ।
मां बन कर इस जग में,
अपनी ममता लुटाती हो ।।

तुमसे है खुशरंग जिंदगी,
तेरे बिन सब रातें काली हैं।
तुमसे है ईद दिलों की,
तुमसे ही रिश्तों की दीवाली है ।।

ईश्वर का वरदान हो,
जग में तुम महान हो ।
शीश झुकाकर खड़े सामने,
नारी तुम भगवान हो ।।

तुम्ही शक्ति, तुम्ही भक्ति
जीवन का कल्याण हो ।
इस दुनिया के हर रिश्ते का,
नारी तुम्ही प्राण हो ।।

तेरा चेहरा

हर मंज़र,हर नज़र दिख़े ;
मुझे तेरा चेहरा ।
मेरी आंखों में बसा है,
अब तेरा चेहरा ।।

बरख़ा की बूंद लगे,
मुझे तेरा चेहरा ।
जाड़े की धुंध लगे,
मुझे तेरा चेहरा ।।

मदहोश , ख़ामोश लगे,
मुझे तेरा चेहरा ।
मेरे अक़्स में नज़र आए,
मुझे तेरा चेहरा ।।

इंसान

कुदरत की कारीगरी हो,
ख़ुद अपनी पहचान हो ।
मत भूलो वज़ूद अपना,
तुम भी एक इंसान हो ।।

मानवता का मंदिर हो तुम,
प्रेम की मिसाल हो ।
माटी के पुतले अजीब,
तुम भी एक इंसान हो ।।

मासूमियत की मूरत हो तुम,
छल कपट अज्ञान हो ।
दुनियादारी में उलझे हुए,
तुम भी एक इंसान हो ।।

पा लो मेहनत से सब कुछ,
लक्ष्य न अंजान हो ।
ओ अपने भाग्य विधाता,
तुम भी एक इंसान हो ।।

उजाला

अंधियारों से घिरा है जीवन,
आओ उजाला खोजें ।
अपने मन की कंदराओं में,
काबा - शिवाला खोजें ।।

विष रूपी इस जग में हम,
प्रेम - प्याला खोजें ।
दर्पण रूपी साहित्यिक मन में,
सूर - निराला खोजें ।।

अब उड़ना है नील गगन में,
अपना रास्ता खोजें ।
डरें नहीं अब कदम बढ़ाकर,
खुद सफलता खोजें ।।

तस्वीर

झील के किनारे बैठकर,
तुझको सोचा करता हूं ।
हाथों में तस्वीर पकड़कर,
तुझको देख़ा करता हूं ।।

तुमसे दूर रहकर मैं,
कैसे ज़िंदा रह पाऊंगा ।
रात और दिन ये दर्द-जुदाई ,
कैसे अब मैं सह पाऊंगा ।।

तस्वीरें तो बस यादें हैं,
यादें तो तड़पाती है।
ताउम्र रहती साथी बनकर,
दिल को ये बहलाती है ।।

देशप्रेम की सुगंध

मुल्क की मुहब्बत को अब,
दिल में बसाइये ।
जा़त पात भूलकर अब,
एक हो जाइये ।।

बंध गए मज़हब हमारे,
रंगों की ज़ंजीर में ।
देश प्रेम खो़ गया है,
नफ़रतों की भीड़ में ।।

देशभक्ति को दिनों का ,
मोहताज मत बनाइये ।
खेल में जीते पाकिस्तान तो,
जश्न मत मनाइये ।।

नया सवेरा

भय के बादल छँट जाने दो ,
प्रेम की अब बात हो ।
अलविदा कहो आतँकी रात को,
एक नया प्रभात हो ।।

गोली चली,खून बहा
ज़मीं भी लाल हो गई ।
हर चप्पा खामोश हुआ,
हर गली वीरान हुई ।।

फिर से गूँजे पूजा के सुर ,
प्रेम की अज़ान हो ।
अलविदा कहो आतँकी रात को,
एक नया प्रभात हो ।।

रक्षाबन्धन

डोर नहीं ये पावन बंधन,
राखी का त्यौहार है ।
रिश्तों की मिठास में ही,
भाई-बहन का प्यार है ।।

पल पल में मनुहार तो,
पल पल में तकरार है ।
बहन की एक राखी में ही,
खुशियों का संसार है ।।

जीवन का झरना

जीवन का यह झरना,
निर्झर बहता रहता है।
बिना रुके और बिना थके,
आगे बढ़ता रहता है ।।

चट्टानों से टकराता है,
फिर भी न रुकता है।
सुख की खुशबू-दुख़ के कांटे,
जीवन भी सहता है ।।।।

रूकते नहीं है बस,
आगे बढ़ते रहते हैं ।
झरना और जीवन बस,
संदेश यही देते हैं ।।

रमज़ान

घर घर में फिर खुशियों का,
सैलाब आया है ।
ईमान का परचम लहराने ,
रमज़ान आया है ।।

गुनाहों की तौबा का ,
मौका फिर लाया है ।
भाईचारे की खुशबु बन,
रमज़ान आया है ।।

सेहरी और इफ़्तार की ,
नेमते भी लाया है ।
मानवता का मसीहा बन,
रमज़ान आया है ।।

मुहब्बत की मिसाल..... ताज बेमिसाल

बनाकर ताज शाहजहां ने,
दुनिया को नायाब तोहफा दिया है।
हर आशिक की यादों में,
मुमताज़ को जिंदा कर दिया है ।।

संगमरमर से तराशा है,
मुहब्बत की निशानी को ।
जज्बातों से लिख दिया,
प्यार की कहानी को ।।

मिसाल ए मुहब्बत को,
दुनिया के रुबरु रख दिया है।
हर आशिक की यादों में,
मुमताज़ को जिंदा कर दिया है।।।।

गुड़ी पड़वा विशेष

नववर्ष की पावन बेला,
नव उल्लास छाया है ।
नवज्योति के आलोक में,
रोशन सब काया है ।।

प्रेम, सब रिश्तों की धुरी,
लोभ-लालच माया है ।
अमूल्य है ये मानव जीवन,
नव संदेश लाया है ।।

www.wasifquazi.blogspot.in

डॉ वासिफ काजी

जन्मतिथि: ५ अगस्त, १९८१
माता: श्रीमती शमा काजी
पिता: स्व.बदरूद्दीन काजी
पत्नी: श्रीमती शबाना काजी
जन्मस्थान: बड़वानी (म.प्र.)
प्रारंभिक शिक्षा: कुक्षी,जि.धार
शैक्षणिक योग्यता - एम.ए. (हिंदी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य), एम.एस-सी. (रसायन),' हिंदी काव्य एवं कहानी की, वर्तमान सिनेमा में प्रासंगिकताषविषय पर शोध-प्रबंध पूर्ण ।
कार्यक्षेत्र: अध्यापन , शैक्षणिक कार्य एवं स्वतंत्र लेखन ।
विधा: काव्य, गजल, आलेख एवं समीक्षा ।

संक्षिप्त जीवन परिचय: डॉ वासिफ काजी ,का जन्म म.प्र. के बड़वानी जिले में हुआ । बाल्यकाल , कुक्षी नगर में व्यतीत कर प्रारंभिक शिक्षा, नगर के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में प्राप्त कर स्नातक एवं स्नातकोत्तर श्रेणी की

शिक्षा : बड़वानी एवं इंदौर में प्राप्त की ।
कुक्षी नगर में सात वर्ष तक हाईस्कूल एवं हायर सेकंडरी कक्षाओं में अध्यापन का कार्य भी कराया । सन् २००७ से इंदौर शहर की कई ख्यातनाम कोचिंग क्लासेस में एवं इस्लामिया करीमिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अनवरत कुशलता पूर्वक अध्यापन कराते हुए ज्ञान दायिनी मां सरस्वती की पुण्य आराधना कर रहे हैं ।

लेखन क्षैत्र: प्रारंभ से ही साहित्यिक गतिविधियों में अभिरुचि रखने वाले वासिफ काजी के कई लेख य दैनिक नवभारत,नईदुनिया ,खबर हलचल और अनेकानेक साहित्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं । श्री काजी , मातृभाषा.काम के नियमित रचनाकार हैं जिसके लिए उन्हें हिंदी ग्राम तथा मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा भाषा सारथी सम्मान से भी विभूषित किया गया ।

ध्येय: हिंदी के प्रति पाठकों, नागरिकों और साहित्य रसिकों के मन-मस्तिष्क में रुचि और सम्मान की भावना उत्पन्न कर सका, तो यही मेरे लेखन की सार्थकता होगी ।

संपर्क (भ्रमणभाष): ८०८५९०१०२१
अणुडाक: wasifquazi08@gmail.com
पता : २८/३/२, अहिल्या पल्टन, इंदौर

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com